शोषित जनता का प्यारा सपूत, गढ़चिरोली संघर्ष का जुझारू नेता और दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य

कामरेड श्रीकांत (हरक) को लाल-लाल सलाम!

प्यारे लोगो!

लम्बी बीमारी के बाद, 26 फरवरी 2012 को दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कामरेड श्रीकांत का निधन हुआ। वे करीब 48 साल के थे। वे पिछले 14 सालों से गढ़चिरोली जिले में क्रांतिकारी आंदोलन का प्रत्यक्ष नेतृत्व कर रहे थे। 2004 में उन्हें पहली बार सीने में दर्द हुआ था। डाक्टरी जांच से पता चला था कि उन्हें दिल के हल्के दौरे पड़ चुके थे। बाद में उन्होंने नियमित रूप से दवाइयां लेना शुरू किया। उसके बाद उन्हें गुरिल्ला जोन की कठिन परिस्थितियों और भीषण शत्रु दमन के चलते नियमित जांच करवाने का मौका नहीं मिल पाया। पर्याप्त आराम और अन्य सुविधाएं भी नहीं मिल पाईं। वे एक जुझारू कामरेड थे जिन्होंने अपनी अस्वस्थता की जरा भी परवाह न करते हुए क्रांतिकारी गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लिया। 2011 के बीच से उनके स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई। शत्रु दमन के चलते इलाज और दवाइयां मिलने में देरी हुई। हालांकि उन्हें बचाने के लिए पार्टी नेतृत्व और पीएलजीए के कामरेडों ने पूरी कोशिश की लेकिन बचा नहीं सके। अपने सभी साथियों और गढ़चिरोली की संघर्षशील जनता को शोक में डुबोकर वे हमसे हमेशा के लिए विदा ले गए।

कामरेड श्रीकांत को घर में माता–पिता ने 'हरक' का नाम दिया था। लेकिन उनके दोस्त और परिचित लोग उन्हें प्यार से 'गुण्डू' या 'गुण्डू भैया' के नाम से पुकारते थे। दरअसल वे इसी नाम से लोकप्रिय थे। उनके माता–पिता उत्तरप्रदेश के मूलनिवासी थे। वे छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के दल्लीराजहरा में बस गए जहां कामरेड श्रीकांत की परवरिश हुई। उनकी पढ़ाई दल्ली और अन्य जगहों में हुई। पढ़ाई के दौरान वे प्रगतिशील व क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित थे। मजदूर संघर्षों का उन पर खासा प्रभाव रहा। उन्होंने स्नातक तक की पढ़ाई पूरी की। वे एक पढ़ाकू छात्र थे। मुंशी प्रेमचंद से लेकर मक्सीम गोर्की तक अनेक देशों के प्रगतिशील व क्रांतिकारी लेखकों की किताबों को उन्होंने पढ़ लिया। इस दौरान मार्क्सवादी सिद्धांत का भी उन्होंने गहराई से अध्ययन किया। नक्सलबाड़ी की राजनीति की प्रेरणा से वे पहले सीपीआई (एम–एल) रेडफ्लैग में शामिल हुए थे। उस पार्टी में सक्रिय रूप से काम करते हुए उसका पूर्णकालीन कार्यकर्ता बने थे। खासकर राजनांदगांव व दुर्ग जिलों में उन्होंने काम किया। सीपीआई (एम–एल) रेडफ्लैग में उन्हें राज्य कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया था।

लेकिन कामरेड हरक अपनी पार्टी की राजनीति और कार्यशैली से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने यह भी देखा था कि शंकर गुहा नियोगी का नेतृत्व वाला छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा भी मजदूर आंदोलन को सही दिशा नहीं दे पा रहा था। और दूसरी तरफ, जहां वे काम कर रहे थे वहां से कुछ ही दूर पर दण्डकारण्य में जारी संघर्ष उन्हें उत्तेजित करता रहा। उन्होंने उस समय की सीपीआई (एम–एल) (पीपुल्सवार) के साथ नाता जोड़ लिया और 1994 में अपने कुछ साथियों को लेकर वे इसमें शामिल हो गए। तब कामरेड हरक को पार्टी के संविधान के मुताबिक डिवीजनल कमेटी सदस्य का दर्जा देते हुए पार्टी में शामिल कर लिया गया। तबसे उन्होंने रायपुर–दुर्ग–राजनांदगांव (आर.डी.आर.) कमेटी के सदस्य के रूप में पार्टी में काम शुरू किया। उन्होंने मुख्य रूप से मजदूरों, युवाओं और छात्रों को संगठित किया। इसके अलावा, सांस्कृतिक क्षेत्र में उनका सराहनीय योगदान रहा। वे खुद एक बढ़िया कलाकार थे। नुक्कड़ नाटक पर उन्हें अच्छी–खासी पकड़ थी। कला के जरिए क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार करने में वे आगे थे।

1998 में शहरी इलाके में हुए कुछ नुकसानों और वहां उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियों को देखते हुए एसजेडसी ने आर.डी.आर. कमेटी को भंग किया और कामरेड श्रीकांत को गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के सदस्य के रूप में स्थानांतरित किया। तबसे लेकर आखिर तक उनका क्रांतिकारी जीवन पूरा गढ़चिरोली में ही गुजरा। सबसे पहले उन्होंने टिप्रागढ़ इलाके में काम किया। अपने लिए अनजान भाषा व अलग संस्कृति होने के बावजूद उन्होंने स्थानीय जनता के साथ रिश्ता बना लिया। सभी के साथ घुलमिल जाने के अपने स्वभाव के चलते उन्होंने जल्द ही जनता और कैडरों सभी का विश्वास जीत लिया। वर्ष 2000 के बाद में उन्हें गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के सचिवालय सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2003 में आयोजित दण्डकारण्य स्पेशल जोन के तीसरे अधिवेशन के पहले प्लेनम में उन्हें एसजेडसी के वैकल्पिक सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2005 में उन्हें एसजेडसी सदस्य के रूप में सहयोजित किया गया। उस समय उन्हें थोड़े समय के लिए मैदानी इलाके में सांगठनिक काम की जिम्मेदारी दी गई थी। उन्होंने दल्ली,

मानपुर, चौकी आदि इलाकों में काम किया। वहां पर बेरोजगार युवाओं को गोलबंद करते हुए पल्लामाड़ क्षेत्र में किए गए एक जुझारू जन संघर्ष का मार्गदर्शन किया। 2006 में दुश्मन ने गढ़चिरोली संघर्ष के एक और महत्वपूर्ण नेता व एसजेडसी सदस्य कामरेड विकास की फर्जी मुठभेड़ में हत्या कर दी। उसके बाद कामरेड श्रीकांत को फिर से गढ़चिरोली जिले में काम संभालना पड़ा। इस बीच आंदोलन के विस्तार को देखते हुए गढ़चिरोली डिवीजन को दो डिवीजनों – उत्तर व दक्षिण में बांटा गया। सितम्बर 2006 में आयोजित डीके के चौथे अधिवेशन में उन्हें फिर से स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2007 में आयोजित पार्टी की एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस में उन्होंने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। कांग्रेस में हुई सैद्धांतिक व राजनीतिक बहसों में उन्होंने सक्रिय भागीदारी ली। 2007 में उन्हें पश्चिम सबजोनल ब्यूरो के प्रभारी के रूप में चुन लिया गया। 2009 में जब सबजोनल ब्यूरो की जगह पर रीजनल कमेटियों का गठन हुआ, तब उन्हें पश्चिम रीजनल कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी दी गई। और उसी समय उन्हें एसजेडसी सचिवालय के सदस्य की जिम्मेदारी भी सौम्प दी गई।

कामरेड श्रीकांत राजनीतिक व सैद्धांतिक रूप से एक सक्षम नेता थे। मार्क्सवाद के मूल सिद्धांतों पर उनकी पकड़ मजबूत थी। क्रांतिकारी लाइन को ऊंचा उठाकर संशोधनवादी व दक्षिणपंथी अवसरवादी विचारों, व्यवहार और रुझानों का उन्होंने हमेशा दृढ़ता से विरोध किया। वे जितनी तेजी से किताबों को पढ़ लेते थे उतनी ही तेजी से लिखते भी थे। कमेटी के प्रस्तावों, समीक्षाओं, रिपोर्टों के साथ–साथ पर्चे, लेख वगैरह वह नियमित रूप से लिखा करते थे। 2006 से उन्हें डीके एसजेडसी का मुखपत्र 'प्रभात' के सम्पादकमण्डल सदस्य की जिम्मेदारी भी दी गई। उन्होंने 'प्रभात' के लिए भी कई लेख लिखे थे। उनकी लेखन–शैली सरल व सुबोध हुआ करती थी। 2009 में एसजेडसी द्वारा प्रकाशित शहीदों की जीवनियों की किताब का उन्होंने सम्पादन किया। कमेटी की बैठकों में वे अपने विचारों को बेबाकी से तथा सुस्पष्ट रूप से प्रकट करते थे। किसी बिंदु पर अगर उन्हें मतभेद या आलोचना हो तो बिना किसी संकोच के कमेटी में रखते थे। बहसों और विचारों के आदान–प्रदान में वे जनवादी तौर–तरीकों से जरा भी विचलित नहीं होते थे। जनवादी केन्द्रीयता को लागू करने में वे हमेशा आगे रहते थे।

कामरेड श्रीकांत की एक और खासियत यह है कि वे हमेशा जमीन से जुड़े रहे। गांवों में संगठन सदस्यों और कार्यकर्ताओं से लेकर पार्टी के अंदर नए–पुराने हर साथी के साथ उनका रिश्ता स्नेहपूर्वक हुआ करता था। छत्तीसगढ़ के मैदानी व शहरी इलाकों से गड़चिरोली व माड़ के दूरदराज के गांवों तक वे जहां भी गए, वहां की जनता का प्यार व विश्वास उन्होंने जीत लिया। अस्वस्थता के चलते घूमने–फिरने में तकलीफ होने पर भी वे अपने साथियों को नियमित रूप से आवश्यक दिशानिर्देश दिया करते थे। अपने आखिरी दिनों में भी जब वे बिस्तर से ठीक से उठ नहीं पा रहे थे, उन्होंने गढ़चिरोली आंदोलन की समस्याओं पर एक आलेख तैयार किया। वे हमेशा आंदोलन के भविष्य के बारे में सोचा करते थे।

एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित कार्यभारों को पूरा करने के लिए कामरेड श्रीकांत ने जनयुद्ध को तेज करने और पीएलजीए को मजबूत बनाने में अपनी तरफ से भरपूर कोशिश की। गढ़चिरोली जिले में जब सी–60 कमाण्डों का आतंक बढ़ने लगा और सरकारी दमन के चलते जनता बुरी तरह परेशान थी तब दुश्मन के बलों का सफाया करने के लक्ष्य से विशेष रूप से कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान चलाए गए थे। इन अभियानों को सफल बनाने में वे जी–जान से जुट गए थे। खासकर 2008–09 में कई फौजी कार्रवाइयों को सफल बनाने में उनका प्रत्यक्ष व परोक्ष योगदान रहा। वे एक प्रेरणादायक नेता थे। जनयुद्ध के मोर्चे में पीएलजीए या जनता द्वारा हासिल हर छोटी सफलता पर वे अपनी खुशी प्रकट करते थे और उनका अभिनंदन करते थे। विफलताओं में भी उनका हौसला बनाए रखने और उससे सही शिक्षा लेने को प्रोत्साहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे।

साथियो! अब कामरेड श्रीकांत नहीं रहे। लेकिन वे जो आदर्श स्थापित कर गए वो हमेशा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे। आज दुश्मन ने हम पर एक बहुत बड़ा युद्ध छेड़ दिया है ताकि हमारी पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन का जड़ से सफाया किया जा सके जिससे कि देश के तमाम प्राकृतिक संसाधनों को साम्राज्यवाद के हवाले किया जा सके। दुश्मन हमारे नेतृत्व को खासतौर पर निशाने पर ले रहा है जिसमें उसे कुछ हद तक सफलता मिल भी रही है। राजसत्ता द्वारा चलाए जा रहे तीखे दमनचक्र के चलते ही कामरेड श्रीकांत को बेहतर इलाज नहीं मिल पाया जिससे अंततः उनकी मृत्यु हुई। आज हम एक कठिन दौर से गुजर रहे हैं। ऐसे में कामरेड श्रीकांत का इस तरह चले जाना दण्डकारण्य आंदोलन के लिए, खासकर गढ़चिरोली जिले में जारी संघर्ष के लिए बहुत बड़ा नुकसान है। इस नुकसान की भरपाई हम जन संघर्षों और जनयुद्ध को तेज करके ही कर सकेंगे। कामरेड श्रीकांत समेत हजारों वीर शहीदों ने जिस शोषणविहीन व समतामूलक समाज का सपना देखा उसे पूरा करने का जिम्मा हम पर है। हम हिम्मत व दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ेंगे। कुरबानियों से नहीं डरेंगे। अंतिम जीत हमारी ही होगी।

✶ कामरेड श्रीकांत अमर रहें! कामरेड श्रीकांत के सपनों को साकार करें!!

✶ इंकलाब जिंदाबाद! मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद जिंदाबाद!!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

12 मार्च 2012